An International Indexed, Refereed, Interdisciplinary, Multilingual, Monthly Research Journal

ISSN 0974-2832

Vol-V, Issue-58, November-2013

Impact Factor - 1.00etc

SHODH SAMIKSHA AUR MULYANKAN

शोध समीक्षा और मूल्यांकन

Indexed in Indian Citation Index, Indian Journal of Advocacy, Engineering, Management, Commerce, Life Sciences, Home Science Economics, Political Science, Public Administration, Education, Music, Law, Human Science, History, Computer, Psychology

AN INTERNATIONAL REFERRED RESEARCH JOURNAL
S.S.M.
WAY TO SUCCESS....
R.A.E.
JAIPUR INDIA



Editor

Dr. KRISHAN BIR SINGH

www.ssmrae.com

Administrative Problems of SC/ST
* Dr. A. Somashekara Murthy 25-27
Job Satisfaction of Secondary School
* Usharani Khuntia ** Dr.B. K. Mohanty
*** Dr.N. Pradhan 28-29
शिक्षणाच्या बाबतीत सर्व शिक्षा अभियानाची यशस्वीता-
* जितेन्द्र विजय कठोळे 101-102
अकोला शहरातील कनिष्ठ महाविद्यालयीन स्तरावरील
* प्रिती डांगे 109-111

English

Nameless Fears of Sylvia Plath
* Ved Parkash ** Dr. Mukesh Ranjan 1-4
Various Themes In The Plays of Tennessee
* Dr. Anshu Nayyar 11-12

Hindi

'रामचरितमानस' में सामाजिक आदर्श और सामाजिक
* डॉ.शहजाद कुरैशी ** शुभम सोनी 56-57
भगवतशरण उपाध्याय और 'उर्वशी-विवाद'
* विनय कुमार 58-59
भारतीय दर्शन की पृष्ठभूमि में कृष्णभक्ति संसिक्ता
* डॉ. शहजाद कुरैशी ** विभा सोनी 60-61
हरि जोशी : एक व्यंग्यकार
* डॉ.रमेश टण्डन 64-65
विद्यापति युगीन मिथिला
* बिन्दु चौहान 66-67
रेडियो और हिन्दी
* सुभाष कुमार यादव 70-72
भक्ति का स्वर्णयुग : कबीर का साहित्य
* डॉ. प्रवीण देशमुख 73-75
हिन्दी साहित्य : द्वन्द्वपूर्ण अनुभूतियों की अभिव्यक्ति
* डॉ. सुनीता डोगरा 76-77
साहित्य और इतिहास का अन्तःसम्बन्ध
* डॉ. विभा पुरोहित 80-81
सिनरिया का संत - 'दिगकर'
* राजा राम यादव 82-84
मंटो के जीवन का तीन सूत्रीय कार्यक्रम
* मो. इसरार 85-86
अहीरवाल के संत महात्मा
* डॉ. शर्मिला यादव 91-93
लिव इन रिलेशनशिप
* डॉ. (श्रीमती) लतिका सिंह 94-95

Research Paper

Regionalism in India : An Overview
* Dr. S. Singh ** Dr. Y. P. Baghel 30-33
To Study Emotional Intelligence
* Porwal Shipra 43-44
The Role of Women in Environment
* Prof. R.T. Thawre ** Prof. A.K. Gaikwad
***Prof. P.R. Karulkar 45-46
भारतीय समाज एवं कार्यशील महिलाऐं
* डॉ. अमिता सिंघल ** डॉ. दिनेश सिंघल 78-79
भारताच्या आर्थिक विकासात पंचवार्षिक योजनाची
* डॉ. आर. डी. सिरुची 106-108
माध्यमिक शाळेतील विद्यार्थीमधील बेशिस्तीचा
* डॉ. एस. एम. सासरे 117-120



The whole of t
foreboding -- t
- nameless fea
actly they are.
by fears. It wo
In the very firs
"Conversation
"you" stalks h
his wild furies
And the fabul
Of all decoru

Who is this "
stroys the rich
appalling ruin
presence in al
Juvenilia "Ter
through nature
stars which w
apples go bad
enon is like b
with a hiss of c
ral as the wo
that the prese
menace; as gc
Th
unnamable dr
that in all phen
the snake in t
In ra
Whe
Lurk
Of si
A similar pres
App
By c
He l
Of th
This followed
His
Han
Ther
And

International Indexed & Refereed Research Journal, ISSN 0974-2832, (Print) E- ISSN- 2320-5474, November,2013, VOL-V * ISSUE-58

शोध पत्र – हिन्दी

हरि जोशी : एक व्यंग्यकार

* डॉ.रमेश टण्डन

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) महात्मा गांधी शासकीय महाविद्यालय नरसिंहपुर (म.प्र.)

November ,2013

सारांश :– दूर दराज गाँव के कंटकाकीर्ण मार्ग से चलकर प्राध्यापक– मेकेनिकल इंजीनियरिंग के पद तक पहुँचने वाले डॉ. जोशी साहब रोज सुबह 1 घंटा भ्रमण के बाद लेखन का कार्य करते हैं, फिर शेष दिन इंजीनियरिंग एवं अंग्रेजी के परिवेश में गुजरता है। स्वयं के शिक्षा जगत से जुड़े रहने के कारण उच्च शिक्षा के प्राध्यापकों की कारगुजारियों पर आपने व्यंग्यार्थ किया। मध्यप्रदेश राज्य परिवहन बस की खस्ता हालत, राजनीति, मानव प्रवृत्ति आदि की आपने कटुआलोचना की। आत्म व्यंग्य करते हुए आपने लिखा कि लेखक होने के कारण मैं बहुत दुखी हूँ। पत्नी पानी का गिलास भी मुझे हाथ में थमाती है, कोई काम नहीं करने देती। यहाँ तक कि पानी का गिलास थमाने के बाद भी मुझे गौर से देखती रहती है, कहीं ऐसा न हो, पानी पीने के बजाय मैं उसे अपने सिर पर उड़ेल लूँ ?

संक्षिप्त परिचय

आपका जन्म 17 नवम्बर 1943 को ग्राम – खुदिया (सिरोली) जिला –हरदा म.प्र. में हुआ। आपने एम.टेक. (इंजीनियरिंग मटेरियल्स) एवं पी–एच.डी. (प्रशीतन) किया है। आप मेकेनिकल इंजीनियरिंग के प्राध्यापक पद से शासकीय उज्जैन इंजीनियरिंग कालेज से 01 मई 2004 को सेवानिवृत्त हुए हैं।

रोज सुबह 1 घंटा भ्रमण के बाद ही आप लिखते हैं। बाकी दिन इंजीनियरिंग एवं अंग्रेजी के परिवेश में गुजरता है। आप दूर दराज गाँव के कंटकाकीर्ण मार्ग से चलकर प्राध्यापक– मेकेनिकल इंजीनियरिंग पद तक पहुँचे। मार्च–अप्रैल 2002 में आपने अमेरिका और इंग्लैण्ड की यात्रा की। आपकी पत्नी श्रीमती विजयलक्ष्मी जोशी भोपाल में, बेटी श्रीमती अपर्णा द्विवेदी मुंबई में, बेटी श्रीमती अर्चना कानूनगो दिल्ली में, बेटा अनुग्रह जोशी दिल्ली में व्यवस्थित हैं।

रचनाएँ

1. अखाड़ों का देश, 1980
2. रिहर्सल जारी है, 1984

इस पर तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह द्वारा आपको निलंबित किया गया।

3. व्यंग्य के रंग, 1993
4. भेड़ की नियति, 1994
5. आशा है, सानंद हैं, 1995
6. पैसे को कैसे लुढ़का लें,1997
7. सारी बातें कांटे की, 2003

आपकी रचनाएँ धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका, कादम्बिनी, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला, दैनिक भास्कर आदि में प्रकाशित हुई हैं। 'दांव पर लगी रोटी' पर मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह द्वारा ऐसी रचना भविष्य में न लिखने की चेतावनी दी गई। 'श्मशान और हाउसिंग बोर्ड का मकान' लिखने पर मध्यप्रदेश हाउसिंग बोर्ड के अध्यक्ष कनक तिवारी ने मानहानि का नोटिस भिजवाया और विभाग को कड़ी कार्यवाही करने हेतु अलग से पत्र दिया। व्यंग्य आपके व्यंग्य निबंधों के अनुशीलन से स्पष्ट है कि आपने विभिन्न विषयों पर कटाक्ष किया है। प्रतीक– उपमानों का प्रयोग करते हुए आपने लिखा है, "एक दुकान पर वैसी ही भीड़ लगी थी जैसे पेट्रोल पम्पों पर स्कूटरों की कतारें इन दिनों देखी जाती है।"[1] "देखते ही देखते उस पैंतालीस सीटर बस में अस्सी से अधिक यात्री ठूँसे जा चुके थे। बस की छत पर पहुँचने को भी उसी प्रकार सीढ़ियाँ थीं, जैसे स्वर्ग सिधारने को होती है।"[2]

राजनीति पर आपने व्यंग्यार्थ किया कि, "दिल बदलते हैं, तो चेहरे भी बदल जाते हैं। समाज सेवी भले ही दिल मिलाते होंगे, राजनेता हाथ मिलाते हैं। हाथ मिलाकर छाप दिखाते हैं। हाथ ऊँचे कर देना भी हाथ दिखाने की कला का ही अंग है। मतदाता सोच रहा था, कई नेताओं के पीछे पुलिस पड़ी है और वे मजबूरी में हाथ उठाए हुए आगे–आगे चल रहे हैं। पीछे पुलिस, आगे नेता।"[3] चुनाव के आपने भिन्न– भिन्न अर्थ दिए, "कुछ प्रत्याशियों के लिए चुनाव 'अर्थ' का चुनाव है, तो अन्य उम्मीदवारों के लिए चुनाव 'एक उनाव' है। चुनाव के बाद जहाँ कुछ लोग बनते देखे गए हैं, तो कई बिगड़ते भी पाए जाते हैं। चुनाव एक 'बनाव' भी है। चुनाव एक प्रवाह है। एक प्रभाव भी है। पीठासीन अधिकारियों के लिए चुनाव तक एक तनाव है।"[4]

राज्य परिवहन की बस सेवा की जर्जर स्थिति पर आपने अपने तेवर तीखे किए हैं, "कुछ स्नानप्रिय यात्री बिना किसी कवच के भीगे जा रहे थे। सच्चाई यह थी कि यात्री सचमुच 'सफर' (अंग्रेजी का) कर रहे थे। अनेक सीटें रेगजीन रहित थीं, भीतर का फोम बाहर झांक रहा था। फोम पानी से तर था। स्थिति यह थी कि बैठने वाला यात्री दसों दिशाओं से पानी का आनंद ले रहा था।"[5] इसी तरह राज्य पुलिस सेवा की कार्य प्रणाली पर भी आपने प्रश्न चिन्ह लगाया, "प्रत्येक अपराधी का पुलिस पीछा तो करती है, किन्तु उसे बहुधा पकड़ नहीं पाती। कई बार तो अपराधी के साथ खा – पीकर पुलिस भी अपराधी बन जाती है। अब एक अपराधी दूसरे को क्यों पकड़े? शरीफों को अपराधी घोषित कर देती है।"[6] शिक्षा जगत की ढपोर–शंख पर जोशी साहब की नजरें तिरछी हुई हैं, "बच्चे ही भेड़ नहीं है, सरकारी कारिंदों ने अध्यापकों को भी भेड़–बकरी बना रखा है। एक डंडे से हांक दिया– सभी शिक्षकों को

जनगणना, परिवार कल्
अब कैसे स्कूल चलायें,
करते हैं तो हैडमास्टर
आए तो हैडमास्टर जि
उच्च शिक्षा
कर्त्तव्यों पर आपने इस
को संबोधित करने के
ही कारना था, ये अध्या
फिर निश्चिंतता से खर्रे
की, अपने ज्ञान की।
का महाविद्यालयीन प्रा
अधिक धनार्जन कर ले
को क्या कहेंगे।"[7]

शोध एवं
हैं, जो कुछ भी हो, र
के पूर्व औषधि की बद
की है, जिसे अन्य शो
यह किसी प्रकार की
भी नहीं है, सिर्फ परीक्ष
करने की प्रेरणा देने व
डाक्टर भी करेंगे, मु

आत्म व्यंग्य
उठाया है। आपने ग्रा-
राज्य बस सेवा, लेख

संदर्भ ग्रंथ

1. जोशी, हरि : पैसे को
2. जोशी, हरि : पैसे को
3. गिरिराज शरण : 1998
4. चंदर, सुभाष : बीकानी
5. जोशी, हरि : पैसे को
6. जोशी, हरि : पैसे को
7. जोशी, हरि : पैसे को
8. जोशी, हरि : पैसे को
9. जोशी, हरि : पैसे को
10. जोशी, हरि : पैसे को
11. जोशी, हरि : पैसे को
12. जोशी, हरि : पैसे को
13. जोशी, हरि : पैसे को
14. जोशी, हरि : पैसे को

जनगणना, परिवार कल्याण, पशुपालन कार्यक्रमों में लगा दिया। अब कैसे स्कूल चलायें, यदि छात्र किसी बात को लेकर हड़ताल करते हैं तो हैडमास्टर जिम्मेवार। पढ़ाई न हो, परिणाम खराब आए तो हैडमास्टर जिम्मेवार।"[7]

उच्च शिक्षा के जिम्मेदार प्राध्यापकों के अमहाविद्यालयीन कर्त्तव्यों पर आपने इस प्रकार व्यंजना की, "जब मुझे प्राध्यापकों को संबोधित करने के लिए कहा गया तो मैंने कहा, 'जिन्हें धंधा ही करना था, वे अध्यापन में क्यों पधारे? खोल लेते कोई दुकान, फिर निश्चिंतता से खरीद–फरोख्त करें, अपने ईमान की, नैतिकता की, अपने ज्ञान की। मोटी–मोटी तनख्वाहें लेने के बाद आज का महाविद्यालयीन प्राध्यापक जब नैतिकता गिरवी रखकर और अधिक धनार्जन कर लेना चाहता है तब आप शिक्षा की सार्थकता को क्या कहेंगे।"[8]

शोध एवं शीशी के शर्मनाक संबंध पर आप असहमत हैं, जो कुछ भी हो, उस शोधार्थी ने परीक्षक के पास शोधग्रंथ के पूर्व औषधि की बड़ी शीशी भेज देने की अच्छी परम्परा शुरू की है, जिसे अन्य शोधार्थी भी अपनाएँ ऐसा मेरा निवेदन है। यह किसी प्रकार की रिश्वत नहीं है, मक्खन लगाने की प्रक्रिया भी नहीं है, सिर्फ परीक्षक को ऊर्जावान और त्वरित गति से कार्य करने की प्रेरणा देने वाली विधि है, जिसका अनुसरण अन्य भावी डाक्टर भी करेंगे, मुझे पूरा विश्वास है।"[9]

आत्म व्यंग्य के बहाने लेखक ने विभिन्न क्षेत्रों से पर्दा उठाया है। आपने ज्ञानी शिक्षक के ज्ञान, भाषा और क्षेत्रीय प्रभाव, राज्य बस सेवा, लेखक की मानसिक स्थिति आदि पर व्यंग्यार्थ प्रस्तुत किया है, "डाक्टर भी अपने परिवार का इलाज स्वयं नहीं करते। बहुधा दूसरे डाक्टरों से इलाज कराते हैं। फिर मैं ऊँची कक्षाओं को पढ़ाने वाला ज्ञानी हूँ, छोटी कक्षाओं को पढ़ाकर अपना अमूल्य समय क्यों नष्ट करूँ।"[10] बस एवं राह दोनों की खराब स्थिति पर, "गंतव्य स्थान पर पहुँचने के बाद तीन दिन मुझे सहज और सामान्य होने में लगे। सब कुछ भूल चुका कि पत्नी से मेरी कहा–सुनी हो गई थी, या पड़ोसी से अनबन। ऐसी सभी कुप्रसंगों को भुलाने का एक ही रास्ता आपके लिए भी अब है, और वह है 'प्रदेश में बस यात्रा'।"[11] स्वयं की स्थिति पर लेखक ने आत्म व्यंग्य किया, "लेखक होने के कारण मैं बहुत सुखी हूँ। पत्नी पानी का गिलास भी मुझे हाथ में थमाती है, कोई काम नहीं करने देती। यहाँ तक कि पानी का गिलास थमाने के बाद भी मुझे गौर से देखती रहती है, 'कहीं ऐसा न हो, पानी पीने के बजाय मैं उसे अपने सिर पर उड़ेल लूँ।"[12]

मानव प्रवृत्ति पर आपने व्यंग्य किया, "एक महाशय किलो की दर से नहीं पूछते, क्विंटल का भाव दुकानदार से पूछते हैं फिर उसी कीमत के अनुपात से सौ या पचास ग्राम वस्तु खरीदते हैं।"[13] आदमी के आदमखोर पर उलाहना की गई, "एक लड़की सैकड़ों साँपों के बीच कई घंटों रही। बल्कि कुछ लड़कियों का कहना है कि सांप बहुत अच्छे दोस्त हैं। वही लड़की इतना समय दस आदमियों के बीच गुजार सकती है? वह जान जाएगी, आदमी जानवरों से भी बदतर हैं।"[14]

संदर्भ ग्रंथ

1. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 41 (ढेर होती शुभकामनाएँ)
2. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 70 (मध्यप्रदेश में बस यात्रा)
3. [illegible] शरण : 1998 की श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृष्ठ 174 (हमने हाथ ऊँचे कर दिए थे : हरि जोशी)
4. [illegible] सुभाष : बीसवीं सदी की चर्चित व्यंग्य रचनाएँ, पृष्ठ 234 (चुनाव सुधारों के लिए कुछ सुझाव : हरि जोशी)
5. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 71 (स्नानागार में यात्रा)
6. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 19 (युवा पीढ़ी के प्रेरणा स्रोत)
7. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 74 (अध्यापक होने की मजबूरी)
8. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 80 (शोषण करना है ? बढ़ो – लिखो)
9. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 84 (पी–एच.डी. बनाम च्यवनप्राश)
10. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 82 (मेरी ट्यूशन करोगे पिता जी ?)
11. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 70 (मध्यप्रदेश में बस यात्रा)
12. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 91 (लेखक होने का सुख दुख)
13. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 11 (भाव करते हुए ताव न खाइए)
14. जोशी, हरि : पैसे को कैसे लुढ़का लें, पृष्ठ 51 (मनुष्य के काटे का इलाज नहीं)